ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

REVIEW OF RESEARCH

बाल अधिकारों के प्रति अध्यापकों के अभिमतों का अध्ययन

डॉ जयंत पाल सिंह[1] , डॉ. शिरीष पाल सिंह[2]
[1]टी.जी.टी सर्वोदय बाल विद्यालय , सी ब्लॉक दिलसाद गार्डन दिल्ली.
[2](पत्राचार लेखक) सह प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय , (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)वर्धा (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :

किसी भी देश के लिए उसके बच्चे सबसे मूल्यवान सम्पत्ति होते हैं। कमेनियस के शब्दों में राज्य के लिए लौह प्राचीर, कांस्य द्वार, रजत तथा स्वर्ण के ढ़ेरों तथा राजमहलों की अपेक्षा बुद्धिमान मनुष्य कहीं अधिक मूल्यवान सम्पत्ति हैं। वे आगे कहते है कि यदि हम किसी व्यक्ति को सद्गुणों से शिक्षित करना चाहते हैं तो उसे कोमल आयु में ही सँवारना चाहिए। वे अध्यापकों को सुझाव देते है ''अध्यापकों को चाहिए कि वे रुखेपन से शिष्यों को अपने से विलग न करें वरन् पितृवत स्थाईभावों तथा शब्दों से उन्हें आकृष्ट करें।'' वे दण्ड का प्रतिषेध करते हैं तथा कहते है कि ''सीखने की तत्परता के अभाव में बालक को दण्ड न दिया जाए। यदि बालक सीखने के लिए तत्पर न हो तो भी उसे दण्ड न दिए जाए, क्योंकि किसी अन्य की गलती नहीं वरन् अध्यापक की भूल है, जो या तो यह नहीं जानता है कि बालक को ज्ञान ग्रहण करने के लिए किस प्रकार तैयार किया जाए या ऐसा करने के लिए प्रयास करने का कष्ट नहीं उठाता, क्योंकि एक संगीतज्ञ अपने सितार को घूँसे, डण्डे से नहीं मारता और न ही उसे दीवार से मारकर तोडता है, क्योंकि वह भद्दी ध्वनी निकालता है। इसके विपरीत वह वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार उस को लययुक्त बनाकर व्यवस्थित करता है।दुनिया के तीन कुपोषित बच्चों में से एक बच्चा भारतीय है और विश्व के आधे कुपोषित बच्चे भारत, बांग्लादेश तथा पाकिस्तान में है। भारत में नवजात शिशुओं में से 30 प्रतिशत बच्चे कम लम्बाई के होते हैं। 6 वर्ष की आयु से कम के 66 प्रतिशत बच्चे अल्पपोषित हैं। भारत में से 14 वर्ष की आयु के बालश्रमिकों की संख्या एक करोड़ छब्बीस लाख थीं (जनगणना 2001) इसी आयु वर्ग के 1 करोड 34 लाख बच्चे विद्यालय नहीं जाते हैं तथा 30 लाख बच्चे 15 वर्ष की आयु से पहले एक बच्चे को जन्म देती हैं । (जनगणना 2001)।

उद्देश्य:

बाल अधिकारों के प्रति अध्यापकों के अभिमतों का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए विधि के रूप में नॉरमेटिव सर्वे का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श

न्यादर्श चयन की विधियों में से अनुसंधायक ने साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्श प्रविधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया है। न्यादर्श के चयन के लिए विद्यालयों को संदर्श–इकाई (Sampling Unit) माना गया है। अध्ययन में 520 अध्यापक सम्मिलित हैं।

समंकों का प्रस्तुतीकरण तथा विश्लेषण

बाल अधिकारों के प्रति अध्यापकों के अभिमतों का विश्लेषण :

हमारे उपकरण में अध्यापकों के अभिमतों का अध्ययन करने के लिए हमारे उपकरण में खण्ड 'ग' में 19 कथन प्रस्तुत किए गए हैं। इस के साथ ही लिगांनुपात के सम्बंध में 6 कथनों का वरीयता क्रम निर्धारण कराया गया है। बालमृत्यु के कारणों के सम्बन्ध में 7 कथनों का वरीयता क्रम निर्धारण कराया गया है। सामाजिक न्याय के सम्बन्ध में पीड़ित वर्गो के बच्चों के विभिन्न वर्गों को प्रस्तुत किया गया हैं तथा उनको भी वरीयताक्रम निर्धारण करने का कार्य किया गया ।इस भाग में हम पहले अभिमतों का अध्ययन कर रहें हैं इसके बाद वरीयता क्रम के सम्बन्ध में अध्ययन करेंगे।

1.प्रतिभा विकास विद्यालय

प्रतिभा विद्यालयों के सम्बन्ध में हमारे उपकरण के खण्ड 'ग' में एक कथन सम्मिलित है। यह कथन इस प्रकार है –

1 प्रतिभा विकास विद्यालयों के बारे में आप क्या सोचते हैं।

1	तुरन्त बन्द किया जाये क्योंकि ये वर्गभेद पैदा करते हैं।
2	इसके कारण बच्चों मं उच्चता–मनोग्रन्थि (Superiority Complex) आ जाती हैं
3	यह एक अच्छी शुरूआत है।

इस कथन पर अध्यापकों के अभिमतों की सारणी 1 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 1

प्रतिभा विकास विद्यालयों के सम्बन्ध में अध्यापकों के अभिमत प्रतिशत में

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	साथर्कता
1	पुरुष	9.0	11.4	79.6	13.019	2	0.001
	महिला	3.1	2.0	94.9			सा.
	ग्रामीण	8.0	13.8	78.2	5.352	2	0.069
	शहरी	7.8	7.5	84.7			सा. न.
	सामान्य	8.3	8.3	83.4	1.415	4	0.852
	ओबीसी	7.7	12.0	80.3			सा. न.
	एससीएसटी	7.2	10.1	82.6			
	समस्त	7.9	9.6	82.5	563.398	2	.000

निर्वचन : अध्यापक अति उच्च प्रतिशत (82.5) में प्रतिभा विद्यालयों को एक अच्छी शुरूआत मान रहे हैं । इस कथन पर महिलाओं का मतदान 94.9 प्रतिशत है । लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर है। अध्यापकों के अन्य वर्गों में उत्तर के अन्तर का स्तर सार्थक नहीं है।

2.विद्यालय में बच्चों के असफल होने के कारणों पर अध्यापकों के अभिमत

अभिमतावली में क्रमांक 15 पर जो कथन है वह इस प्रकार है :–

विद्यालयों में बच्चों के असफल होने का कारण है :

1. विद्यालय का अपने दायित्व का पूरा न करना ।
2. माता–पिता की शिक्षा के प्रति उदासीनता ।
3. बच्चों का बौद्धिक स्तर नीचा होना ।

इस कथन पर अध्यापकों के अभिमतों को सारणी 2 में प्रस्तुत किया गया

सारणी 2

विद्यालय में बच्चों के असफल होने के कारणों पर अध्यापकों के अभिमत

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		सार्थकता
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	
15	पुरुष	14.0	72.5	13.5	16.332		.0001
	महिला	7.1	63.3	29.6		2	सा
	ग्रामीण	9.2	75.3	15.5	3.439		0.179
	शहरी	14.5	68.5	17.1		2	सा.नं0
	सामान्य	11.7	72.1	16.2	1.338		1.855
	ओ.बी.सी.	15.4	69.2	15.4		4	सा.न.
	एस.सी.एस.टी.	12.3	69.6	18.1			
	समस्त	12.7	70.8	16.5	338.761	2	0.000

निर्वचन :

समस्त अध्यापकों का 70.8 प्रतिशत बच्चों के असफल होने का कारण माता पिता की शिक्षा के प्रति उदासीनता को मान रहे हें । समस्त अध्यापकों में से केवल 12.7 प्रतिशत विद्यालय को बच्चों के असफल होने का कारण मान रहे हैं ।

3. बालश्रम उन्मूलन के बारे में अध्यापकों के अभिमत :

बालश्रम उन्मूलन के सम्बन्ध में हमारे उपकरणों में जो प्रश्न सम्मिलित है वे इस प्रकार हैं :–

8. बालश्रम उन्मूलन अधिनियम हैं :

1	ब बच्चों को काम के अधिकार से वंचित करना
2	बच्चों के हित में है ।
3	ा–पिता के साथ अन्याय है ।

सारणी 3
बाल श्रम अन्मूलन के सम्बन्ध में अध्यापकों के अभिमत

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		सार्थकता
		1	2	3	मूल्य	डी.एफ.	
8	पुरुष	14.7	82.9	2.4	1.446		0.485
	महिला	10.2	86.7	3.1		2	सा.न.
	ग्रामीण	15.5	81.0	3.4	1.682		0.43
	शहरी	13.0	85.0	2.0		2	सा.न.
	सामान्य	12.5	85.7	1.9	2.648	4	0.61
	ओ.बी.सी.	13.7	83.8	2.6			सा.न.
	एस.सी.एस.टी.	16.7	79.7	3.6			
	समस्त	13.8	83.7	2.5	677.466	2	.000

निर्वचन : अध्यापक बालश्रम उन्मूलन को 83.7 प्रतिशत मतदान कर बच्चों के हित में मानते हैं । काम के अधिकार से बालकों को वंचित करने पर अध्यापकों में से 13.5 प्रतिशत ने मतदान किया है । माँ–बाप के साथ अन्याय मानने वाले अध्यापकों का प्रतिशत 2.5 है ।

4.बालिकाओं की शिक्षा के सम्बन्ध में अध्यापकों के अभिमतः

बालिकाओं की शिक्षा के सम्बन्ध में हमारे उपकरण में कथन 10, 11, 18 तथा 19 हैं । इसके अतिरिक्त 20 से 26 तक के कथनों पर क्रम निर्धारण कराया गया है । पहले हम कथनों के सम्बन्ध में अध्ययन कर रहे हैं इसके बाद क्रम निर्धारण का अध्ययन करेंगे । हमारा कथन 10 इस प्रकार हैं।

लड़कियों की साक्षरता प्रतिशत में कमी

10. लड़कियों की शिक्षा की प्रतिशतता में कमी का कारण है :

	शतता में कमी ही कहां हैं , लड़कियां तो अधिक पढ़ रही हैं ।
	ा के महत्व को न समझना।
	कियों को पराया धन मानना ।

इस कथन पर अध्यापकों के अभिमतों के सारणी 4(क) में प्रस्तुत किया गया है

सारणी 4 (क)
लड़कियों की शिक्षा में कमी पर अध्यापकों के अभिमत प्रतिशत में

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		सार्थकता
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	
10	पुरुष	21.3	28.2	50.5	23.721	2	0.000
	महिला	44.9	16.3	38.8			
	ग्रामीण	23.0	24.7	52.3	1.821	2	0.402
	शहरी	27.2	26.6	46.2			
	सामान्य	27.5	27.5	44.9	5.460	4	0.243
	ओ.बी.सी.	19.7	23.1	57.3			
	एससीएसटी	27.5	25.4	47.1			
	समस्त	25.8	26.0	48.3	54.591	2	.000

निर्वचन : 25.8 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि लड़कियां तो अधिक पढ़ रही हैं । 26 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि शिक्षा के महत्व को न समझने के कारण लड़कियों की शिक्षा की प्रतिशत कम है ।

4 (ख) लडकियों का पोषण : लड़कियों के सम्बन्ध में हमारा अगला कथन इस प्रकार है ।

11. कुछ परिवारों में (आपके नहीं) लड़कियों के भोजन का स्तर लड़कों के भोजन स्तर से निम्न होता है।

	।

	।
	। नहीं जा सकता।

इस कथन के उत्तरों को सारणी 4 (ख) में प्रस्तुत किया गया है ।

सारणी 4 (ख)
अध्यापकों द्वारा लड़कियों के भोजन स्तर का अनुमान

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		सार्थकता
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	
11	पुरुष	52.4	21.8	25.8	5.627	2	0.060 सा.न.
	महिला	53.1	30.6	16.3			
	ग्रामीण	50.6	20.1	29.3	4.456	2	0.108 सा.न.
	शहरी	53.5	25.1	21.4			
	सामान्य	50.2	24.2	25.7	2.697	4	0.610 सा.न.
	ओबीसी	59.0	20.5	20.5			
	एससीएसटी	51.4	24.6	23.9			
	समस्त	52.5	23.5	24.0	81.864	2	.000

निर्वचन : समस्त अध्यापकों का 52.5 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि कुछ परिवारों में लड़कियों के भोजन का स्तर लड़कों के भोजन से निम्न स्तर का होता है ।

4 (ग) लड़कियों का डरपोक होना : लड़कियों के सम्बन्ध में हमारा अगला कथन इस प्रकार है ।

18. लड़कियां गप्पी (Catter) और डरपोक (Tind Scared) होती है।

1	समाज उन्हें ऐसा बनाता है ।
2	सहमत ।
3.	असहमत।

इस कथन पर अध्यापकों के उत्तर को सारणी 4 (ग) में प्रस्तुत किया गया है

सारणी – 4 (ग)
लड़कियां गप्पी तथा डरपोक होती है । इस कथन पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तर।

कथन	ापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		र्कता
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	
18	ष	46.0	9.2	44.8	0.592	2	0.744 सा.न.
	ला	44.9	7.1	48.0			
	ीण	47.1	7.5	45.4	0.664	2	0.717 सा.न.
	री	45.1	9.3	45.4			
	ान्य	44.5	9.1	46.4	2.851	4	0.583 सा.न.
	ोसी	52.1	6.8	41.0			
	सीएसटी	42.8	10.1	47.1			
	स्त	45.8	8.8	45.4	144.318	2	.000

निर्वचन : कथन ''लडकियां'' गप्पी तथा डरपोक होती हैं से 45.4 प्रतिशत अध्यापक असहमत हैं। 45.8 प्रतिशत मानते हैं कि उन्हें समाज ऐसा बनाता है। केवल 8.8 प्रतिशत अध्यापक लड़कियों को गप्पी तथा डरपोक मानते हैं।

4 (घ) लड़कियों के लिए अध्ययन विषय

19-लड़कियों को केवल गृह विज्ञान शिशुपालन, कला, संगीत जैसे विषयों की शिक्षा ही दी जाए।

1	मत
2	हमत
3.	ये विषय तो होने ही चाहिए इसके अतिरिक्त अन्य विषय जैसे गणित विज्ञान, कम्प्यूटर आदि भी होने चाहिए।

इस कथन पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तर को सारणी 4 (घ) में प्रस्तुत किया जा रहा है ।

सारणी – 4 (घ)
लड़कियों के लिए अध्ययन विषयों पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तर

न	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		र्कता
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	
19	पुरुष	3.6	26.8	69.7	6.652	2	36
	महिला	1.0	38.8	60.2			न.
	ग्रामीण	3.4	23.6	73.2	3.820	2	48
	शहरी	2.9	31.8	65.3			न.
	सामान्य	2.6	30.2	67.2	6.392	4	72
	ओबीसी	3.4	20.5	76.1			
	एससीएसटी	3.6	34.1	62.3			
	समस्त	3.1	29.0	67.9	327.966	2	)

निर्वचन : अधिकांश अध्यापक चाहते हैं कि लड़कियों को गृह विज्ञान आदि विषयों के साथ विज्ञान, गणित तथा कम्प्यूटर आदि विषयों की शिक्षा भी दी जाए । समग्र अध्यापकों की यह प्रतिशत 67.9 है । केवल गृह विज्ञान आदि विषयों की शिक्षा से असहमत अध्यापक 29.0 प्रतिशत हैं । केवल 3.1 प्रतिशत अध्यापक चाहते हैं कि उन्हें गृह , शिशुपालन, कला संगीत जैसे विषयों की शिक्षा ही दी जाए।

4 (ड़) लिंगानुपात कम होने के कारणों के सम्बन्ध में अध्यापकों द्वारा क्रम निर्धारण

हमारे उपकरण में लिंगानुपात के कम होने के कारणों में से प्रमुख 6 कारणों को प्रस्तुत किया गया है। इन कारणों पर अध्यापकों के द्वारा क्रम निर्धारण को सारणी 4.4.4 (ड) में प्रस्तुत किया गया है । इस सारणी में अंक प्रदान करने के लिए अध्यापकों के द्वारा प्रदत्त क्रम निर्धारण को भारांकन के लिए प्रदान की गई विधि इस प्रकार है – क्रम निर्धारण को प्रदान की गई प्रथम वरीयता को छह से , द्वितीय वरीयता को पाँच से, तृतीय वरीयता को चार से , चतुर्थ वरीयता को तीन से, पंचम वरीयता को दो से तथा षष्ठ वरीयता को एक से गुणा करके अंक प्रदान करके सबके योग को अंक माना गया है । समग्र अंको के आधार पर अन्तिम वरीयता क्रम निर्धारण किया गया है ं उपकरण में प्रस्तुत अभिमत प्रश्न इस प्रकार है

हमारे देश में लिंगानुपात कम है । इसके कुछ कारण नीचे लिखे गये हैं ।

इनका क्रम निर्धारण कीजिए । जिस कारण को आप सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं उसे 1, क्रम दीजिए जो सबसे कम महत्वपूर्ण है उसे अन्तिम अर्थात छठा क्रम दीजिए । कृपया सभी को वरीयता क्रम प्रदान करें :

	कारण	क्रम निर्धारण
	भ्रूण हत्या ।	
	कन्या शिशु की अच्छी देखभाल न करना ।	
	प्रसव के दौरान महिलाओं की मृत्यु होना ।	
	दहेज हत्याएं ।	
	कन्या को जन्म के बाद मार देना ।	
	बार–बार गर्भधारण के कारण स्त्री की मृत्यु होना ।	

अध्यापकों के द्वारा प्रदत्त क्रम निर्धारण को सारणी 4 (ड) में प्रस्तुत किया गया है

सारणी.4 (ड)
लिंगानुपात कम होने के कारणों पर अध्यापकों द्वारा किये गये क्रम निर्धारण की आवृत्तियाँ, अंक तथा अन्तिम क्रम निर्धारण ।

कारण	क्रम निर्धारणों पर आवृतियाँ						योग	अंक	अन्तिम क्रम निर्धारण
	1	2	3	4	5	6			
20	396	72	15	16	4	17	520	2869	1
21	18	126	208	62	56	50	520	1918	2
22	9	76	123	134	145	33	520	1651	3
23	20	59	47	105	122	167	520	1329	6
24	7	143	58	48	84	180	520	1481	5
25	59	37	58	145	100	121	520	1527	4
योग	509	513	509	510	511	568	3120	–	–

लिंगानुपात कम होने के कारणों पर अध्यापकों द्वारा किये गये क्रम निर्धारण

निर्वचन :

अध्यापकों के अनुसार भ्रूणहत्या लिंगानुपात कम होने का प्रमुख कारण है । इसके अतिरिक्त प्रमुख दो कारण कन्या शिशु की अच्छी देखभाल न करना तथा प्रसव के दौरान महिलाओं की मृत्यु होना है। बार–बार गर्भधारण के कारण स्त्रियों की मृत्यु होना तथा कन्याओं को जन्म के बाद मार देना तथा दहेज हत्याएं लिंगानुपात कम होने के गौण कारण हैं ।

5 विद्यालयों में लोकतंत्र का प्रशिक्षण हमारे उपकरण में विद्यालयों में लोकतंत्र के प्रशिक्षण के लिए छात्र संसद का निर्माण करने सम्बन्धित कथन इस प्रकार है–

1. लोकतंत्र के प्रशिक्षण के लिए विद्यालयों में छात्र–संसद का चुनाव कराना ।

िंक	कारण
	अनुशासनहीनता को बढ़ावा देना ।
	अध्यापकों को कार्यक्रमों के आयोजन करने में सहायता मिलती है।
	सैद्धान्तिक रूप से अच्छा प्रायोगिक स्तर पर असफल होता है।

इस कथन पर आये अध्यापकों के उत्तरों को सारणी 5 में प्रस्तुत किया गया है।

निर्वचन : अध्यापक अति उच्च प्रतिशत में छात्र संसद का चुनाव कराना इसलिए उपयुक्त समझते हैं क्योंकि इसमें अध्यापकों को कार्यक्रमों का आयोजन करने में सहायता मिलती है ।

सारणी. 5

लोकतंत्र के प्रशिक्षण के लिए विद्यालयों में चुनाव : अध्यापकों के अभिमत

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		सार्थकता
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	
19	पुरुष	14.7	66.3	19.0	3.805	2	0.149
	महिला	10.2	76.5	13.3			
	ग्रामीण	14.4	68.4	17.2	0.112	2	0.945
	शहरी	13.6	68.2	18.2			
	सामान्य	14.7	66.8	18.5	2.469	4	0.650
	ओबीसी	13.7	72.6	13.7			
	एससीएसटी	12.3	67.3	20.4			
	समस्त	13.8	68.3	17.9	295.289	2	.000

6 पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के सम्बन्ध में अध्यापकों के अभिमत :

6 (क) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ : खेल कूद

हमारे उपकरण में पाठ्यक्रम सहयोगी क्रियाओं के बारे में अभिमतावली में दो प्रश्न हैं। क्रमांक 12 पर प्रस्तुत कथन इस प्रकार है ।

12. विद्यालयों में उपलब्ध खेल कूद के साधनों से आप।

1	ष्ट हैं ।
2.	र व्यवस्था है ।
3.	र की आवश्यकता ळें

इस कथन पर प्राप्त अध्यापकों के उत्तर सारणी 6 (क) में प्रस्तुत किये गए हैं ।

सारणी 6 (क)

विद्यालयों में उपलब्ध खेलकूद के साधनों पर अध्यापकों के अभिमत ।

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		र्कता
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	
19	पुरुष	9.2	5.9	84.9	3.805	2	0.219
	महिला	7.1	2.1	90.8			स.ना.
	ग्रामीण	8.8	2.9	89.2	3.193	2	0.203
	शहरी	9.2	6.4	84.4			स.ना.
	सामान्य	8.7	5.3	86.0	2.938	4	0.538
	ओबीसी	6.0	4.3	89.7			स.ना.
	एससीएसटी	11.6	5.8	82.6			
	समस्त	8.8	5.2	86.0	655.93	2	.000

निर्वचन : विद्यालयों में खेलकूद के साधनों से संतुष्ट अध्यापक मात्र 8.8 प्रतिशत हैं। जबकि 86.0 प्रतिशत व्यवस्था में सुधार चाह रहे हैं । व्यवस्था को बेकार मानने वाले अध्यापक 5.2 प्रतिशत हैं।

6 (ख) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं : सांस्कृतिक साहित्यिक आदि परिषदें : पाठ्यक्रम सहयोगी क्रियाओं के सम्बन्ध में हमारे उपकरण में प्रस्तुत दूसरा कथन क्रमांक 16 पर है । वह इस प्रकार है।

16. विद्यालयों में सांस्कृतिक, साहित्यिक, खेलकूद, विज्ञान क्लब आदि परिषदें बनाई जाती है। ये परिषदें बालकों के विकास में

1	सहयोगी हैं ।
2.	कोई लाभ नहीं
3.	केवल कागजों की खानापूर्ति है।

इस कथन पर प्राप्त अध्यापकों के अभिमत सारणी 6 (ख) में प्रस्तुत किये गए हैं ।

सारणी 6 (ख)
विद्यालयों में संचालित परिषदों पर अध्यापकों के अभिमत

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		सार्थकता
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	
19	पुरुष	89.8	2.4	7.8	1.745	2	0.418
	महिला	93.9	2.0	4.1			स.ना
	ग्रामीण	87.4	1.1	11.5	8.867	2	0.012
	शहरी	92.2	2.9	4.9			स.ना
	सामान्य	89.8	3.0	7.2	1.976	4	0.740
	टोबीसी	89.7	1.7	8.5			स.ना.
	एससीएसटी	92.8	1.4	5.8			
	समस्त	90.6	20.3	7.1	764.330	2	.000

निर्वचन : सांस्कृतिक, साहित्यिक, खेलकूद परिषदों तथा विज्ञान क्लब आदि के अध्यापक बालकों के विकास में सहयोगी मानने वाले अध्यापक 90.6 प्रशिशत हैं। शहरी अध्यापकों में यह प्रतिशत ग्रामीणों की अपेक्षा उच्च है यह अन्तर 4.8 प्रतिशत का है।

बाल मृत्युदर अति उच्च होने के कारणों पर अध्यापकों के अभिमत :

हमने उपकरण में 0 से 5 वर्ष की आयुवर्ग के बालकों की मृत्यु दर के कारणों पर, अध्यापकों के द्वारा क्रम निर्धारण के लिए जो प्रस्तुतीकरण किया गया हैं, वह इस प्रकार हैं

हमारे देश में 0 से 5 वर्ष की आयु के बच्चों की **मृत्यु दर** अति उच्च हैं। उसके कुछ कारणों को नीचे की पंक्तियों में लिखा गया हैं जिस कारण को आप सबसे अधिक प्रभावी मानते हैं उसके सामने बने कॉलम में 1 अंक लिखें, इसी प्रकार 7 तक क्रम दीजिए :

क्रम	कारण	क्रम निर्धारण
26	जन्म के समय बच्चे का शरीर भार कम होना।	
27	माता–पिता की अज्ञानता।	
28	दोषपूर्ण प्रसव	
29	प्रोटीन कैलोरी कुपोषण।	
30	टीकाकरण न कराना	
31	चिकित्सा सुविधा की कमी।	
32	समय से पूर्व जन्म हो जाना।	

उपर्युक्त प्रकरण पर अध्यापकों के द्वारा निर्धारित क्रम निर्धारित को सारणी 4.4.7 में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी–7
बाल मृत्यु दर के कारणों पर अध्यापकों द्वारा किए गए वरीयता क्रम निर्धारणों पर अध्यापकों की आवृत्तियां, अंक तथा अन्तिम क्रम निर्धारण।

कारण का क्रमाकं	क्रम निर्धारण की आवृत्तियाँ							योग	अंक	अन्तिम क्रम निर्धारण
	1	2	3	4	5	6	7			
26	25	37	66	115	40	57	180	520	1601	7
27	161	48	65	44	52	57	93	520	279	3
28	99	74	64	147	54	31	51	520	2320	2
29	54	82	119	54	103	67	41	520	2165	4
30	28	122	51	42	111	116	50	520	1966	5
31	103	97	69	48	124	37	42	520	2328	1
32	43	51	75	60	27	142	122	520	1709	6
योग	513	511	509	510	511	507	579	3640	–	–

निर्वचन : बाल मृत्यु दर पर अध्यापकों के द्वारा किए गए क्रम निर्धारण से प्राप्त अंकों से स्पष्ट हो रहा है कि बाल मृत्यु का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक चिकित्सा सुविधाओं की कमी है। अध्यापक द्वारा प्रदत्त वरीयता अंको के आधार पर भारत में बाल मृत्यु दर उच्च होने के कारणों का क्रम निर्धारण क्रमशः इस प्रकार हैं । 1. चिकित्सा सुविधाओं का अभाव, 2.दोषपूर्ण प्रसव, 3. माता–पिता की अज्ञानता, 4. प्रोटीन तथा कैलोरी कुपोषण, 5. टीकाकरण न कराना , 6. बच्चों का समय से पूर्व जन्म ले लेना, 7. जन्म के समय बच्चे का शरीर भार कम होना है ।

विद्यालय परिस्थितियों में बच्चों के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अध्यापकों के अभिमत

बच्चों के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में खण्ड 'ग' में दो कथन है । पहला कथन है –

स्वास्थ्य अभिलेख

2. सभी विद्यालयों में प्रत्येक बालक का स्वास्थ्य अभिलेख रखा जाए।

1.	आवश्यक होना चाहिए ।
2.	कोई आवश्यकता नहीं है ।
3.	परिवार को रखना चाहिए ।

इस कथन पर प्राप्त हुए अध्यापकों के उत्तरों को सारणी 8(क) में प्रस्तुत किया गया हैं।

निर्वचन : अतिउच्च प्रतिशत (81.0) में अध्यापक मानते हैं कि विद्यालयों में छात्रों का स्वास्थ्य अभिलेख रखा जाए। शहरी अध्यापक ग्रामीण अध्यापकों की अपेक्षा अधिक प्रतिशत में समर्थन प्रदान कर रहे हैं

सारणी–8 (क) विद्यालयों में बालकों का स्वास्थ्य अभिलेख

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	सार्थकता
2	पुरुष	79.9	4.5	15.6	5.536	2	0.063 सा.न.
	महिला	85.7	7.1	7.1			
	ग्रामीण	79.9	1.1	19.0	12.314	2	0.002 सा.
	शहरी	81.5	6.9	11.6			
	सामान्य	78.5	6.8	14.7	5.663	4	0.226 सा.न.
	टोबीसी	80.3	3.4	16.2			
	एससीएसटी	86.2	2.9	10.9			
	समस्त	81.0	5.0	14.0	521.284	2	.000

8 (ख) शुद्ध पेयजल

इस खण्ड में अध्यापकों से स्वास्थ्य विषयक जो दूसरा प्रश्न पूछा गया है वह हैं –

3 विद्यालय में स्वच्छ और शुद्ध जल का सुप्रबन्ध होना बहुत महत्वपूर्ण हैं :–

	बच्चे अपना स्वयं का जल लेकर आयें। लेकर आते ही हैं अतः यह बेकार ही हैं।
	अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि अनेक रोग अशुद्ध जल से ही होते हैं।

इस कथन में केवल दो विकल्प हैं। प्रदत्त उत्तरों की सारणी 4.4.8 (ख) में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 8 (ख)
विद्यालयों में स्वच्छ तथा शुद्ध पेयजल के सम्बन्ध में अध्यापकों के अभिमत

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां		काई वर्ग		
		1	2	मूल्य	डीएफ	सार्थकता
3	ष	4.7	95.3	0.536	1	0.467
	ला	3.1	96.9			
	ीण	2.9	97.1	1485	1	0.223 सा.नि.
	री	5.2	94.8			
	ान्य	3.0	97.0	2.526	2	0.283 सा.नि.
	ोसी	6.0	94.0			
	सीएसटी	3.8	96.2			
	स्त	4.4	95.6	436.364	2	0.000

निर्वचनः विद्यालयों में स्वच्छ शुद्ध पेयजल का प्रबन्ध कराना महत्वपूर्ण मानने वाले अध्यापकों का प्रतिशत 95.69 है।

सामाजिक न्याय से वंचित विभिन्न वर्गों के बच्चों का क्रम निर्धारण :

हमारे उपकरण में विभिन्न वर्गों के बच्चों को सामाजिक न्याय से वंचित वर्गों के बच्चों का क्रम निर्धारण करने के लिए जो प्रस्तुतीकरण किया गया हैं वह इस प्रकार है।हमारे कुछ बच्चे सामाजिक अन्याय से पीड़ित हैं। हमने कुछ वर्गो के नाम नीचे लिखे हैं। इन वर्गों में से जिस वर्ग के बच्चों को आप सर्वाधिक पीड़ित मानते हैं उस वर्ग के सामने बने कॉलम में 1 अंक लिखें। इसी प्रकार जिस वर्ग को सूची में अपेक्षाकृत सबसे कम पीड़ित मानते हैं। उसे 8वां क्रम दें।

क्रम	वर्गों के नाम	क्रम निर्धारण
33	सवर्ण जातियों के निर्धन परिवारों के बच्चे।	
34	अन्य पिछड़े वर्गों के बच्चे।	
35	अनुसूचित जातियों के बच्चे	
36	सभी वर्गों की लड़कियां	
37	अल्पसंख्यक समुदायों के बच्चे।	
38	मानसिक तथा शारीरिक विकलांग बच्चे।	
39	अनाथ बच्चे।	
40	खाना–बदोश/एक स्थान पर बसकर न रहने वाले परिवारों के बच्चें।	

उपर्युक्त संदर्भ में अध्यापकों द्वारा किए गये क्रम निर्धारण को सारणी– 9 में प्रस्तुत किया गया है।

निर्वचन: सामाजिक न्याय से वंचित बच्चों को अध्यापकों द्वारा किए गए क्रम निर्धारण के आधार पर प्राप्त वर्गों का क्रम इस प्रकार है । 1. खाना बदोश जातियों के बच्चे। 2. अनाथ बच्चे । 3. मानसिक तथा शारीरिक विकलांग बच्चे। 4 सभी वर्गों की लड़कियां। 5. अनुसूचित जातियों के बच्चे। 6. अल्पसंख्यक समुदायों के बच्चे । 7. अन्य पिछडे वर्गों के बच्चे । 8. सर्वण जातियों के निर्धन बच्चे ।अध्यापकों के मतानुसार शैक्षिक दृष्टि से सहयोग प्रदान करने के लिए उपर्युक्त क्रम को ध्यान में रखकर बच्चों के हित संरक्षण के लिए योजनाओं का निर्माण करना, अधिक उपादेय तथा न्याय संगत रहेगा ।

सारणी – 9
सामाजिक न्याय से वंचित, विभिन्न वर्गों के बच्चों का क्रम निर्धारण पर आवृतियां, अंक एवं अंतिम क्रमनिर्धारण

वर्गों के नाम	क्रम निर्धारण पर आवृतियां								योग	अंक	अन्तिम क्रम निर्धारण
	1	2	3	4	5	6	7	8			
33	31	6	18	30	26	117	38	254	520	1333	8
34	4	14	20	25	58	64	221	114	520	1355	7
35	64	25	27	59	111	94	112	28	520	2122	5
36	26	20	43	193	91	59	48	40	520	2248	4
37	3	30	28	91	140	119	48	61	520	1931	6
38	40	140	185	66	37	24	13	15	520	3001	3
39	132	171	118	26	24	20	15	14	520	3291	2
40	217	109	77	25	26	14	18	34	520	3302	1
योग	517	515	516	515	513	511	513	560	4160	–	–

10 विकलांग बच्चों के सम्बन्ध में अध्यापकों के अभिमत :

खण्ड ग में विकलांग बच्चों के सम्बन्ध में चार कथन सम्मिलित हैं ये कथन है । 4 ,6, 7 तथा 9 कथन संख्या 4 इस प्रकार है –

10 (क) विकलांगो के प्रति आमराय

4. बच्चों का विकलांग होना ।

1.	पूर्व जन्म के कर्मो का फल है ।
2.	अभिशाप है ।
3.	यह असुविधा जरूर है। विकलांगता की कमी को सुविधा देने पर दूर किया सकता है ।

इस कथन पर प्राप्त हुए अध्यापकों के उत्तरों को सारणी 10(क) प्रस्तुत किया गया है।

सारणी–10 (क)
विकलांगता के सम्बन्ध में अध्यापकों के अभिमत

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	सार्थकता
2	पुरुष	3.6	4.3	92.2	0.687	2	0.709
	महिला	2.0	5.1	92.9			
	ग्रामीण	1.7	4.0	94.3	2.111	2	0.348
	शहरी	4.0	4.6	91.3			
	सामान्य	4.2	3.4	92.5	2.734	4	0.603
	ओबीसी	2.6	6.0	91.5			
	एससीएसटी	2.2	5.1	92.8			

	समस्त	3.3	4.4	92.3	824.266	2	0.000

निर्वचन : 92.3 प्रतिशत अध्यापक विकलांगता को असुविधा मानते हैं जिसे सुविधा देने पर दूर किया जा सकता है। केवल 3.3 प्रतिशत अध्यापक विकलांगता को पूर्व जन्मों के कर्मों का फल मानते हैं जबकि शेष 4.4 प्रतिशत अभिशाप मानते हैं । खण्ड ग में विकलांगता से सम्बन्धित दूसरा प्रश्न इस प्रकार है –

10 (ख) मूक बधिर बालकों के बारे में अध्यापकों के अभिमत

6. मूक–बधिर बालकों के बारे में आप क्या सोचते हैं :

1.	ये कम बुद्धि वाले होते हैं ।
2.	ये गुस्सैल और तनुक मिजाज होते है ।
3.	ये अन्य बालकों की तरह ही होते है । इन्हें पढ़ाने की विधि अलग है।

इस कथन पर अध्यापकों के उत्तरों को सारणी 10(ख) में प्रस्तुत किया गया है ।

सारणी–10 (ख)
मूक बधिर बालकों के बारे में अध्यापकों के अभिमत

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	सार्थकता
6	पुरुष	6.6	3.1	90.3	4.772	2	0.092 सा.न.
	महिला	1.0	3.1	95.9			
	ग्रामीण	4.6	2.3	93.1	1.053	2	0.591 सा.न.
	शहरी	6.0	3.5	90.5			
	सामान्य	6.0	3.4	90.6	0.752	4	0.945 सा.न.
	ओबीसी	5.1	3.4	91.5			
	एससीएसटी	5.0	2.2	92.8			
	समस्त	5.6	3.1	91.3	190.989	2	0.000

निर्वचन :अति उच्च प्रतिशत 91.3 प्रतिशत में अध्यापकों का मानना है कि मूक बधिर बालक सामान्य बालकों की तरह ही होते हैं । इनके शिक्षण की विधि अलग है । केवल 5.6 प्रतिशत इन बालकों को गुस्से वाले मानते हैं ।

10 (ग) दृष्टिबाधित बच्चों के सम्बन्ध में अध्यापकों की सोच : खण्ड ग में विकलांगता से सम्बन्धित अगला प्रश्न इस प्रकार है – पढ़ाई लिखाई में दृष्टिबाधित (अंधे) बालक सामान्य बच्चों की अपेक्षा होते हैं –

1.	अधिक ग्रहणशील होते हैं
2.	कम ग्रहणशील होते हैं ।
3.	अन्य बच्चों की तरह ही होते हैं ।

इस कथन पर अध्यापकों के उत्तरों को सारणी 10(ग) में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी–10 (ग)
दृष्टिबाधित बालकों के सम्बन्ध में अध्यापकों के अभिमत प्रतिशत

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	सार्थकता
7	पुरुष	45.5	5.2	49.3	0.215	2	0.898 सा.न
	महिला	45.9	4.1	50.0			
	ग्रामीण	41.1	1.7	51.1	5.902	2	0.05 सा.
	शहरी	44.8	6.6	48.6			
	सामान्य	53.2	6.0	40.8	16.406	4	0.003 सा.
	ओबीसी	37.6	3.4	59.0			

	एससीएसटी	37.6	4.3	58.0			
	समस्त	45.6	5.0	49.4	190.989	2	0.000

निर्वचन :
दृष्टि बाधित बच्चों को अध्यापक 49.4 प्रतिशत में अन्य बच्चों की तरह ही मानते हैं । जबकि 45.6 प्रतिशत अध्यापक इन्हें अधिक ग्रहणशील मान रहे हैं । 49.4 प्रतिशत अध्यापकों के मत अधिक तर्क संगत है क्योंकि इन बच्चों में भी सामान्य बच्चों की तरह ही वैयक्तिक विभेद पाये जाते हैं ।

10 (घ) विकलांग बच्चों को छात्रवृत्ति

विकलांग बच्चों के सम्बन्ध में खण्ड (ग) में जो अगला कथन है वह है –

9. विकलांग बच्चों को छात्रवृत्ति देने के बजाय उन्हें अच्छे विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा दी जाए।

1.	वृत्ति ही ठीक रहती है ।
2.	ासीय विद्यालयों में भर्ती कराया जाए ।
3.	वृत्ति देना भी बेकार और विद्यालय खोलना भी ।

इस कथन पर प्राप्त अध्यापकों के मतों को सारणी 4.4.10 (घ) में प्रस्तुत किया गया है ।

सारणी 10 (घ)
छात्रवृत्ति के स्थान पर विकलांग बालकों को अच्छे विद्यालय में शिक्षा दिये जाने के बारे में अध्यापकों के अभिमत प्रतिशत

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	सार्थकता
9	पुरुष	17.8	81.5	0.7	0.7	2	0.97
	महिला	20.4	78.6	1.0			सा.न.
	ग्रामीण	15.5	83.3	1.1	1.757	2	0.415
	शहरी	19.6	79.8	0.6			सा.न.
	सामान्य	17.3	81.9	0.8	2.736	4	0.603
	ओबीसी	18.8	79.5	1.7			
	एससीएसटी	19.6	80.4	0			सा.न.
	समस्त	18.2	81.0	0.8	564.239	2	0.000

निर्वचन : 81 प्रतिशत अध्यापक चाहते हैं कि विकलांग बच्चों को सावासीय विद्यालयों में शिक्षा दी जाए । 18.2 प्रतिशत छात्रवृत्ति देने को ही ठीक मान रहे हैं । जबकि दोनों को बेकार कहने वाले अध्यापक मात्र 0.8 प्रतिशत हैं ।

11 किशोर अपराधियों के बारे में अध्यापकों के अभिमत

खण्ड (ग) में किशोर अपराधियों के सम्बन्ध में एक कथन है । वह इस प्रकार है ।

14. किशोर सुधार गृहों (किशोर कारागार) में पढ़ाई, लिखाई, खेलकूद, मनोरंजन, अच्छे भोजन तथा चिकित्सा सुविधाओं का प्रबन्ध होना आवश्यक है ।

1.	फिर यह जेल ही क्या होगी । यह तो अच्छा छात्रावास हो जायेगा
2.	अपराधियों को यह निरन्तर याद दिलाया जाये कि वह अपराधी हैं ।
3.	सभी को जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं मिलना आवश्यक है ।

इस कथन पर अध्यापकों को अभिमतों को सारणी 11 में प्रस्तुत किया गया है ।

सारणी –11. किशोर सुधार गृहों में सुविधाओं पर अध्यापकों के अभिमत ।

. कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	सार्थकता
14	पुरुष	6.2	9.7	84.1	6.413	2	0.041
	महिला	3.0	3.0	93.9			सा.
	ग्रामीण	5.1	7.5	87.4	0.439	2	0.803
	शहरी	5.7	9.0	85.3			सा.न.
	सामान्य	4.2	7.9	87.9	2.610	4	0.625
	ओबीसी	7.7	8.5	83.8			
	एससीएसटी	6.5	9.4	84.1			सा.न.
	समस्त	5.6	8.5	86.0	654.761	2	0.000

निर्वचन

अध्यापकों में से 86 प्रतिशत का मानना है कि किशोर कारागारों का प्रबन्ध उत्तम होना चाहिए क्योंकि जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं तो सभी को मिलनी ही चाहिए । केवल 8.5 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि अपराधियों को निरंतर याद दिलाया जाए कि वह अपराधी हैं । 5.6 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि किशोर कारागारों को अधिक सुविधापूर्ण न बनाया जाए । किशोर अपराधियों के लिए महिलाएं, पुरुष अध्यापकों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील हैं ।

12 पुस्तकालयों के सम्बन्ध में अध्यापकों का अभिमत : उपकरण के खण्ड ग में पुस्तकालय से संबंधित प्रश्न इस प्रकार हैं ।

13. विद्यालयों के पुस्तकालय में आयु वर्गानुसार बाल साहित्य की उपलब्धता ।

1.	संतोषजनक है ।
2.	असंतोषजनक है ।
3.	सुधार की आवश्यकता है ।

इस कथन पर अध्यापकों को अभिमतों को सारणी 4.4.12 में प्रस्तुत किया गया है ।

निर्वचन :73.7 प्रतिशत अध्यापक पुस्तकालयों में सुधार चाहते हैं तथा इन्हें संतोषजनक मानने वाले अध्यापक 16.1 प्रतिशत हैं । जबकि 10.2 प्रतिशत असंतोषजनक मान रहे हैं।

सारणी 12

विद्यालय पुस्तकालयों में आयु वर्गानुसार बाल साहित्य की उपलब्धता

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियां			काईवर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डीएफ	सार्थकता
13	पुरुष	15.9	11.4	72.7	3.425	2	0.180
	महिला	17.3	5.1	77.6			
	ग्रामीण	14.9	10.9	74.2	0.382	2	0.826
	शहरी	16.8	9.8	73.4			सा.न.
	सामान्य	17.4	9.8	72.8	2.723	4	0.625
	ओबीसी	14.5	7.7	77.8			
	एससीएसटी	15.2	13.0	71.7			सा.न.
	समस्त	16.1	10.2	73.7	381.83	2	0.000

निष्कर्ष

हमारा उद्देश्य बाल अधिकारों के प्रति अध्यापकों के अभिमतों का अध्ययन है । इसके प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं

1 अध्यापक अति उच्च प्रतिशत (82.5) में प्रतिभा विद्यालयों को एक अच्छी शुरूआत मान रहे हैं । इस कथन पर महिलाओं का मतदान 94.9 प्रतिशत है । लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर है। अध्यापकों के अन्य वर्गों में उत्तर के अन्तर का स्तर सार्थक नहीं है।

2 अध्यापक बालश्रम उन्मूलन को 83.7 प्रतिशत मतदान कर बच्चों के हित में मानते हैं । काम के अधिकार से बालकों को वंचित करने पर अध्यापकों में से 13.5 प्रतिशत ने मतदान किया है । माँ–बाप के साथ अन्याय मानने वाले अध्यापकों का प्रतिशत 2.5 है ।

3 अध्यापक बालश्रम उन्मूलन को 83.7 प्रतिशत मतदान कर बच्चों के हित में मानते हैं । काम के अधिकार से बालकों को वंचित करने पर अध्यापकों में से 13.5 प्रतिशत ने मतदान किया है । माँ–बाप के साथ अन्याय मानने वाले अध्यापकों का प्रतिशत 2.5 है ।

4 लड़कियों की शिक्षा में प्रतिशतता में कमी का कारण उन्हें परायाधन मानना है । ऐसा अभिमत 48.3 प्रतिशत अध्यापकों का है । ओबीसी के अध्यापकों की यह प्रतिशत 57.3 है जबकि पुरुष अध्यापकों की प्रतिशत 50.5 है ।

5 समस्त अध्यापकों का 52.5 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि कुछ परिवारों में लड़कियों के भोजन का स्तर लड़कों के भोजन से निम्न स्तर का होता है । इस प्रश्न के उत्तर में उच्च प्रतिशत में मत व्यक्त करने वाले वर्ग इस प्रकार हैं – ओबीसी 59.0 महिलाएं 53.1 तथा शहरी अध्यापक 53.3 प्रतिशत हैं । परन्तु किसी भी वर्ग में यह अन्तर 0.05 सार्थक स्तर अधिक नहीं है।

5 कथन ''लडकियां'' गप्पी तथा डरपोक होती हैं से 45.4 प्रतिशत अध्यापक असहमत हैं। 45.8 प्रतिशत मानते हैं कि उन्हें समाज ऐसा बनाता है। केवल 8.8 प्रतिशत अध्यापक लड़कियों को गप्पी तथा डरपोक मानते हैं।

6 अधिकांश अध्यापक चाहते हैं कि लड़कियों को गृह विज्ञान आदि विषयों के साथ विज्ञान, गणित तथा कम्प्यूटर आदि विषयों की शिक्षा भी दी जाए । समग्र अध्यापकों की यह प्रतिशत 67.9 है । केवल गृह विज्ञान आदि विषयों की शिक्षा से असहमत अध्यापक 29.0 प्रतिशत हैं । केवल 3.1 प्रतिशत अध्यापक चाहते हैं कि उन्हें गृह , शिशुपालन, कला संगीत जैसे विषयों की शिक्षा ही दी जाए।

7 . अध्यापकों के अनुसार भ्रूणहत्या लिंगानुपात कम होने का प्रमुख कारण है । इसके अतिरिक्त प्रमुख दो कारण कन्या शिशु की अच्छी देखभाल न करना तथा प्रसव के दौरान महिलाओं की मृत्यु होना है। बार–बार गर्भधारण के कारण स्त्रियों की मृत्यु होना तथा कन्याओं को जन्म के बाद मार देना तथा दहेज हत्याएं लिंगानुपात कम होने के गौण कारण हैं ।

8 68.3 प्रतिशत अध्यापकों की मान्यता है कि छात्र संसद के चुनाव से अध्यापकों को विद्यालयों में कार्यक्रम कराने में सहायता मिलती है। जबकि इससे अनुशासनहीनता बढ़ने का भय 13.8 प्रतिशत अध्यापकों के है तथा 17.9 प्रतिशत इसे सैद्धान्तिक रूप से सफल तथा प्रायोगिक स्तर पर असफल मानते हैं । अध्यापकों के मतानुसार शैक्षिक दृष्टि से सहयोग प्रदान करने के लिए उपर्युक्त क्रम को ध्यान में रखकर बच्चों के हित संरक्षण के लिए योजनाओं का निर्माण करना, अधिक उपादेय तथा न्याय संगत रहेगा ।

9 विद्यालयों में खेलकूद के साधनों से संतुष्ट अध्यापक मात्र 8.8 प्रतिशत हैं। जबकि 86.0 प्रतिशत व्यवस्था में सुधार चाह रहे हैं । व्यवस्था को बेकार मानने वाले अध्यापक 5.2 प्रतिशत हैं।

10 विद्यालयों में खेलकूद के साधनों से संतुष्ट अध्यापक मात्र 8.8 प्रतिशत हैं। जबकि 86.0 प्रतिशत व्यवस्था में सुधार चाह रहे हैं । व्यवस्था को बेकार मानने वाले अध्यापक 5.2 प्रतिशत हैं।

11 अध्यापकों द्वारा प्रदत्त वरीयता अंको के आधार पर भारत में बालमृत्यु दर उच्च होने के कारणों का क्रम निर्धारण क्रमशः इस प्रकार हैं । 1. चिकित्सा सुविधाओं का अभाव, 2.दोषपूर्ण प्रसव, 3.माता–पिता की अज्ञानता, 4. प्रोटीन तथा कैलोरी कुपोषण, 5. टीकाकरण न कराना , 6. बच्चों का समय से पूर्व जन्म ले लेना, 7. जन्म के समय बच्चे का शरीर भार कम होना ।

13 अतिउच्च प्रतिशत (81.0) में अध्यापक मानते हैं कि विद्यालयों में छात्रों का स्वास्थ्य अभिलेख रखा जाए। शहरी अध्यापक ग्रामीण अध्यापकों की अपेक्षा अधिक प्रतिशत में समर्थन प्रदान कर रहे हैं।

14 विद्यालयों में स्वच्छ शुद्ध पेयजल का प्रबन्ध कराना महत्वपूर्ण मानने वाले अध्यापकों की प्रतिशत 95.69 है।

15 सामाजिक न्याय से वंचित बच्चों को अध्यापकों द्वारा किए गए क्रम निर्धारण के आधार पर प्राप्त वर्गों का क्रम इस प्रकार है । 1. खाना बदोश जातियों के बच्चे। 2. अनाथ बच्चे । 3. मानसिक तथा शारीरिक विकलांग बच्चे। 4 सभी वर्गों की लड़कियां। 5. अनुसूचित जातियों के बच्चे। 6. अल्पसंख्यक समुदायों के बच्चे । 7. अन्य पिछडे वर्गों के बच्चे । 8. सर्वण जातियों के निर्धन बच्चे । अध्यापकों के मतानुसार शैक्षिक दृष्टि से सहयोग प्रदान करने के लिए उपर्युक्त क्रम को ध्यान में रखकर बच्चों के हित संरक्षण के लिए योजनाओं का निर्माण करना, अधिक उपादेय तथा न्याय संगत रहेगा ।

16: 92.3 प्रतिशत अध्यापक विकलांगता को असुविधा मानते हैं जिसे सुविधा देने पर दूर किया जा सकता है। केवल 3.3 प्रतिशत अध्यापक विकलांगता को पूर्व जन्मों के कर्मों का फल मानते हैं जबकि शेष 4.4 प्रतिशत अभिशाप मानते हैं ।

17 अति उच्च प्रतिशत 91.3 प्रतिशत में अध्यापकों का मानना है कि मूक बधिर बालक सामान्य बालकों की तरह ही होते हैं । इनके शिक्षण की विधि अलग है । केवल 5.6 प्रतिशत इन बालकों को गुस्से वाले मानते हैं ।

18 दृष्टि बाधित बच्चों को अध्यापक 49.4 प्रतिशत में अन्य बच्चों की तरह ही मानते हैं । जबकि 45.6 प्रतिशत अध्यापक इन्हें अधिक ग्रहणशील मान रहे हैं । 49.4 प्रतिशत अध्यापकों के मत अधिक तर्क संगत है क्योंकि इन बच्चों में भी सामान्य बच्चों की तरह ही वैयक्तिक विभेद पाये जाते हैं ।

19 दृष्टि बाधित बच्चों को अध्यापक 49.4 प्रतिशत में अन्य बच्चों की तरह ही मानते हैं । जबकि 45.6 प्रतिशत अध्यापक इन्हें अधिक ग्रहणशील मान रहे हैं । 49.4 प्रतिशत अध्यापकों के मत अधिक तर्क संगत है क्योंकि इन बच्चों में भी सामान्य बच्चों की तरह ही वैयक्तिक विभेद पाये जाते हैं ।

20 81 प्रतिशत अध्यापक चाहते हैं कि विकलांग बच्चों को सावासीय विद्यालयों में शिक्षा दी जाए । 18.2 प्रतिशत छात्रवृत्ति देने को ही ठीक मान रहे हैं । जबकि दोनों को बेकार कहने वाले अध्यापक मात्र 0.8 प्रतिशत हैं ।

21 अध्यापकों में से 86 प्रतिशत का मानना है कि किशोर कारागारों का प्रबन्ध उत्तम होना चाहिए क्योंकि जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं तो सभी को मिलनी ही चाहिए । केवल 8.5 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि अपराधियों को निरंतर याद दिलाया जाए कि वह अपराधी हैं । 5.6 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि किशोर कारागारों को अधिक सुविधापूर्ण न बनाया जाए । किशोर अपराधियों के लिए महिलाएं, पुरुष अध्यापकों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील हैं

22 73.7 प्रतिशत अध्यापक पुस्तकालयों में सुधार चाहते हैं तथा इन्हें संतोषजनक मानने वाले अध्यापक 16.1 प्रतिशत हैं । जबकि 10.2 प्रतिशत असंतोषजनक मान रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. Balakrishanan, R. (1994): The Sociological Context of Girls' Schooling: Micro Perspectives from Delhi Slums in Social Action, 44 (July-September) 1994.
2. Barua, B. (2003) : Jour. of All India Association for edu. Research Vol. 15, 3-4.
3. Basu , D.D. (2003) : Human Right in constitutional Law New Delhi Law Publishers, II Edition.
4. Bee, H. (1978) : The Developing Child, New York : Harper & Row Publishers.
5. Best, John W. (1986) : Research in Education, New Delhi Prentice Hall.
6. Beckett,Chris(2007): Child Protection-an Introduction. New Delhi SAGE Publications. www.sagepublication.com.
7. CRIN: Child Right Information Network c/o Save The Child.1 Sant John, Lane London ECIMAAR London.U.K. www.crin.org
8. Dhanda, V. & Nath, M. (1994) : Prachi Jour. of Psycho-Cultural Dimentions vol. 10C 1 , 1981
9. Diwan, Rasmi (1993): Sixth Survey of Edu. Research NCERT.
10. Dow, U. (1998): Birth Registration: The First Right IN UNICEF Progress of Nation 1998. New York. UNICEF
11. Durkheim, E. (1953) : Moral Education, New York : Free Press of Glencoe.
12. Edword, Landon (1991) : Encyclopedia of Human Rights, London Francis Inc.
13. Ebrahim,G. J. (1985) :Social and Community Pediatrics in developing Countries Caring for the Rural and Urban Poor Macmillan.
14. Ehlers, H. (1977) : Crucial Issues in Education, New York : Holt, Rinehart and Winston.

15. Gangani Rajesh (2006): Status of Children in India .New Delhi Cyber Tech Publication.
16. Garret, E. Henry (2004) : Statistics in Psychology & Education. New Delhi, Paragon International Publishers, Dariyaganj.
17. Geetha,C.V& Bhaskar, G. (1993) :Education for human rights and democracy. Simla,Indian Institute of Advance Studies, Workshop.
18. Giri,K. (1995):Safe Motherhood Strategies in the Developing Countries in H M Wallace, Giri, K and Serrano, C V (eds) Health Care of Women and Children in Developing Countries, Oakland C A: Third Party Publishing Company .
19. Goldbrick, D.M. (1991) : Human Rights, its Role in development of International conversant on Civil & Political Rights. Oxford Uni.